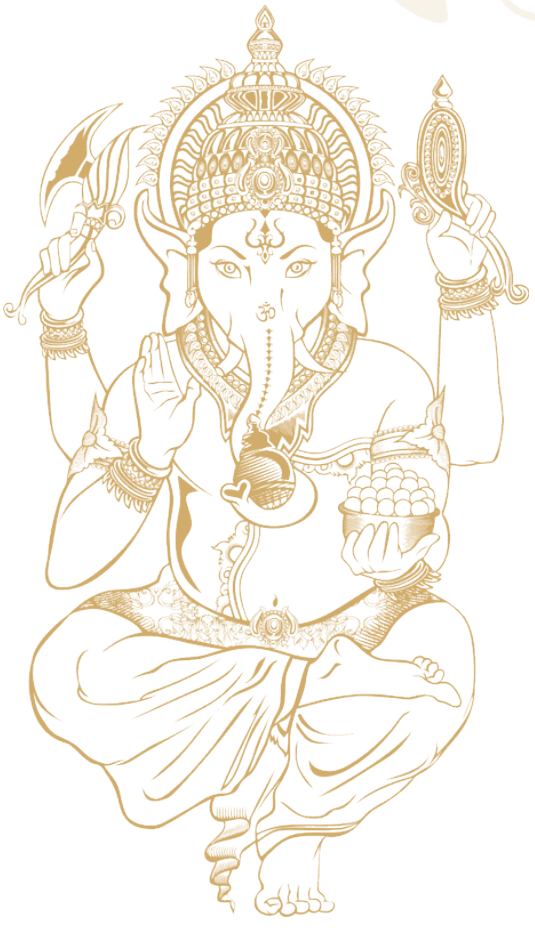

Mr.shivalik

Tanvi Sinha

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120322602

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
24/05/1994	जन्म तिथि	26/12/1995
मंगलवार	दिन	मंगलवार
घंटे 17:34:00	जन्म समय	15:00:00 घंटे
घटी 31:23:52	जन्म समय(घटी)	21:06:34 घटी
India	देश	India
Patna	स्थान	Vishakhapatnam
25:37:00 उत्तर	अक्षांश	17:42:00 उत्तर
85:12:00 पूर्व	रेखांश	83:24:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:10:48	स्थानिक संस्कार	00:03:36 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:00:27	सूर्योदय	06:24:43
18:31:50	सूर्यास्त	17:28:47
23:46:56	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:11

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
गुरु 3वर्ष 9मा 16दि	27:40:24	तुला	लग्न	वृष	05:23:12	राहु 13वर्ष 2मा 24दि
बुध	09:18:42	वृष	सूर्य	धनु	10:19:32	शनि
11/03/2017	00:10:12	वृश्चि	चंद्र	कुंभ	10:11:50	21/03/2025
11/03/2034	06:38:19	मेष	मंगल	धनु	26:00:22	20/03/2044
बुध 07/08/2019	01:17:07	मिथु	बुध	धनु	27:56:57	शनि 24/03/2028
केतु 03/08/2020	13:07:11	तुला व	गुरु	धनु	04:24:06	बुध 02/12/2030
शुक्र 04/06/2023	10:20:41	मिथु	शुक्र	मक	11:54:50	केतु 10/01/2032
सूर्य 10/04/2024	17:54:10	कुंभ	शनि	कुंभ	25:14:17	शुक्र 12/03/2035
चन्द्र 09/09/2025	00:02:22	वृश्चि व	राहु व	कन्या	29:47:06	सूर्य 22/02/2036
मंगल 06/09/2026	00:02:22	वृष व	केतु व	मीन	29:47:06	चन्द्र 22/09/2037
राहु 26/03/2029	02:20:08	मक व	हर्ष	मक	05:14:10	मंगल 01/11/2038
गुरु 02/07/2031	29:20:48	धनु व	नेप	मक	00:40:16	राहु 07/09/2041
शनि 11/03/2034	02:43:37	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	07:57:21	गुरु 20/03/2044

लग्न-चलित

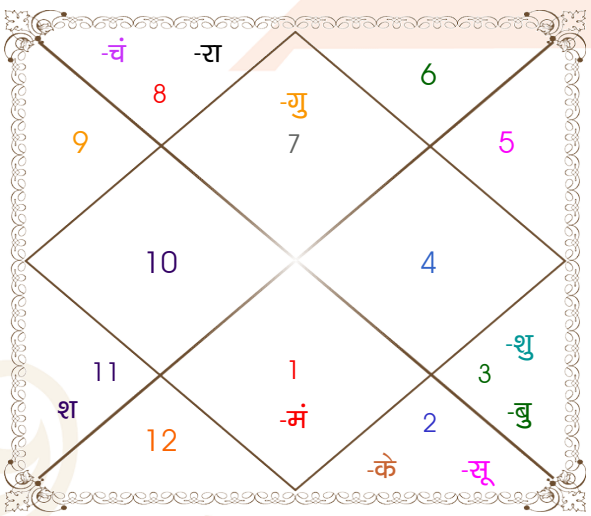

लग्न-चलित

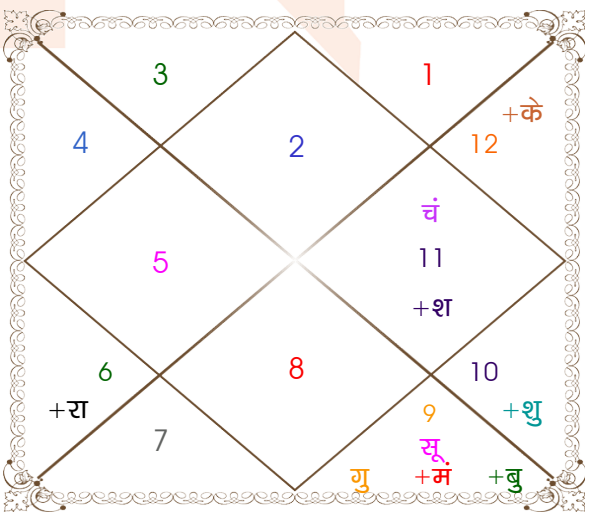

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	अश्व	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	शनि	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	कुम्भ	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.50		

डतणैपअंसपा का वर्ग सर्प है तथा ज्ंदअपै पदीं का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतणैपअंसपा और ज्ंदअपै पदीं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतणैपअंसपा मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है। क्योंकि मंगल डतणैपअंसपा कि कुण्डली में सप्तम् भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि डतणैपअंसपा कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

ज्ंदअपै पदीं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु ज्दअप ैपदीं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतणैपअंसपा तथा ज्दअप ैपदीं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।